

Pradeep

05 Mar 1987

07:15 AM

Jeypore

लालकिताब जन्मपत्रिका

लाल किताब की इस जन्मपत्रिका में जन्मकुण्डली, दशा, ग्रह स्पष्ट, लाल किताब कुण्डली व वर्ष कुण्डली के साथ यह भी बताया गया है कि आपका एवं परिवार का स्वास्थ्य कैसा रहेगा एवं उनका आपके प्रति व्यवहार कैसा रहेगा। इसमें रत्न कौन सा धारण करें व अन्य उपायों के साथ ग्रह फल, दशा फल व वर्षफल आदि भी दिए गए हैं। प्रयत्न किया गया है कि जातक को जिस प्रकार की जानकारी प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है वह पूरी तरह दी जा सके।

लालकिताब जन्मपत्रिका को ध्यान से पढ़ने पर आपको यह मालूम होगा कि आपके साथ क्या घटना घटित हो रही है। ग्रहों के आधार पर यह भी बताया गया है कि अमुक जातक को पूजा-पाठ करना चाहिए या नहीं। वर्षफल में जिन सावधानियों को बरतने के लिये कहा गया है, उन सावधानियों के प्रति आजीवन सतर्क रहें। जो बातें आपके लिये शुभ लिखी गयी है, उनको अपने जीवन में अवश्य अपनाएं एवं जिन बातों को आपके लिये अशुभ लिखा गया है उन बातों को निश्चय कर हमेशा के लिये त्याग दें।

इस लालकिताब में व्यवसाय, कारोबार, नौकरी आदि के बारे में भी बतलाया गया है। इनसे संबंधित आपके लिये क्या लाभदायक रहेगा और क्या हानिकारक रहेगा इसकी विशेष जानकारी दी गयी है। जीवन में अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए लालकिताब के उपाय जिस समय तथा जिन आयु में करने के लिए कहे गये हैं उन्हीं आयु में ही करें।

लालकिताब में जीवन में आने वाली कठिनाईयों का समय भी दर्शाया गया है। जीवन में कब कहां और जीवन के किस मोड़ पर कौन सी परेशानी आ सकती है यह तो बताया ही गया है साथ ही इनसे बचने के उपाय भी बताये हैं। यदि आपका समय अच्छा चल रहा है और आप अपने लिए दिये गये उपाय कर रहे हैं तो आपके भाग्य का फल कई गुना बढ़ जायेगा और यदि प्रतिकूल समय में आप यह उपाय कर रहे हैं तो आपका बुरा समय धीरे-धीरे नष्ट हो जायेगा एवं सफलता आपके कदमों को चूमेगी।

सभी जातकों से अनुरोध है कि इस लालकिताब जन्मपत्रिका को अपने जीवन में केवल मार्गदर्शक के रूप में ही उपयोग करें व इसके अक्षराक्षर पर निर्भर न रहें। इस पत्रिका में हमने अनेक शास्त्रों की सहायता लेकर आपके लिए फलादेश दिए हैं लेकिन विभिन्न कारणवश इसकी कोई गारंटी नहीं ली जा सकती कि यह पूर्ण रूपेण सत्य ही हो। अतः जातक इस पत्रिका पर आधारित निर्णय के लिए स्वयं ही जिम्मेदार होंगे।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 05/03/1987
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 07:15:00 घंटे
इष्ट _____: 02:26:11 घटी
स्थान _____: Jeypore
राज्य _____: Odisha
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:52:00 उत्तर
रेखांश _____: 82:38:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:00:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:15:32 घंटे
वेलान्तर _____: -00:11:41 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:04:40 घंटे
सूर्योदय _____: 06:16:31 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:05:58 घंटे
दिनमान _____: 11:49:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 20:16:24 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 07:48:46 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: भरणी - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: कौलव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गज
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
चुँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ले-लेखपाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	फाल्गुन	14
पंजाबी	संवत : 2043	फाल्गुन	22
बंगाली	सन् : 1393	फाल्गुन	20
तमिल	संवत : 2043	मासी	21
केरल	कोल्लम : 1162	कुंभम	21
नेपाली	संवत : 2043	फाल्गुन	21
चैत्रादि	संवत : 2043	फाल्गुन	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2043	फाल्गुन	शुक्ल 6

पंचांग

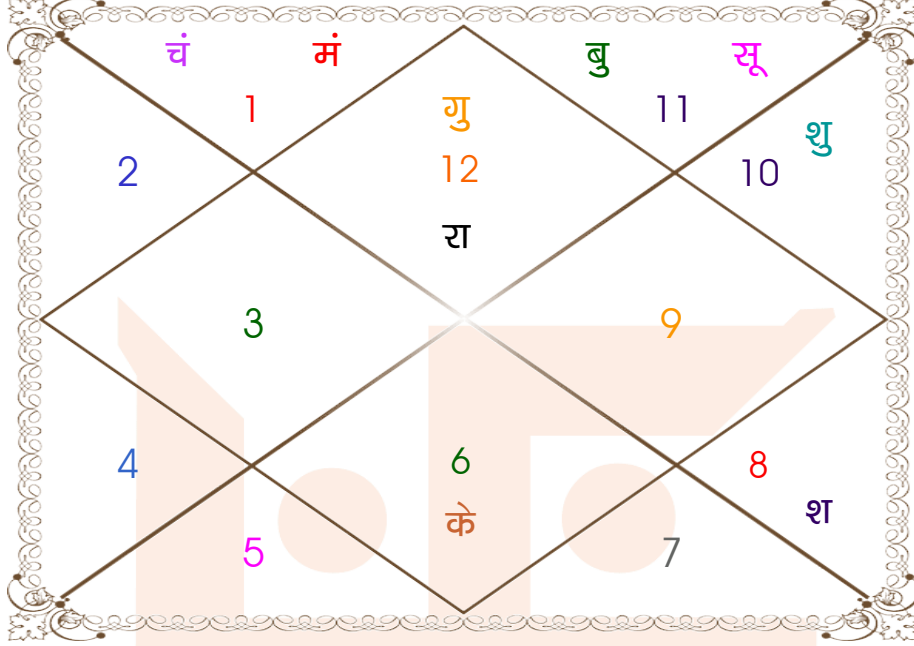
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 26:35:25
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 14:08:07 घंटे
जन्म योग _____ : भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____ : 13:08:03 घंटे
जन्म योग _____ : ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 13:54:48 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 46:15:42
भभोग _____ : 63:28:30
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 5 वर्ष 4 मा 13 दि

घात चक्र

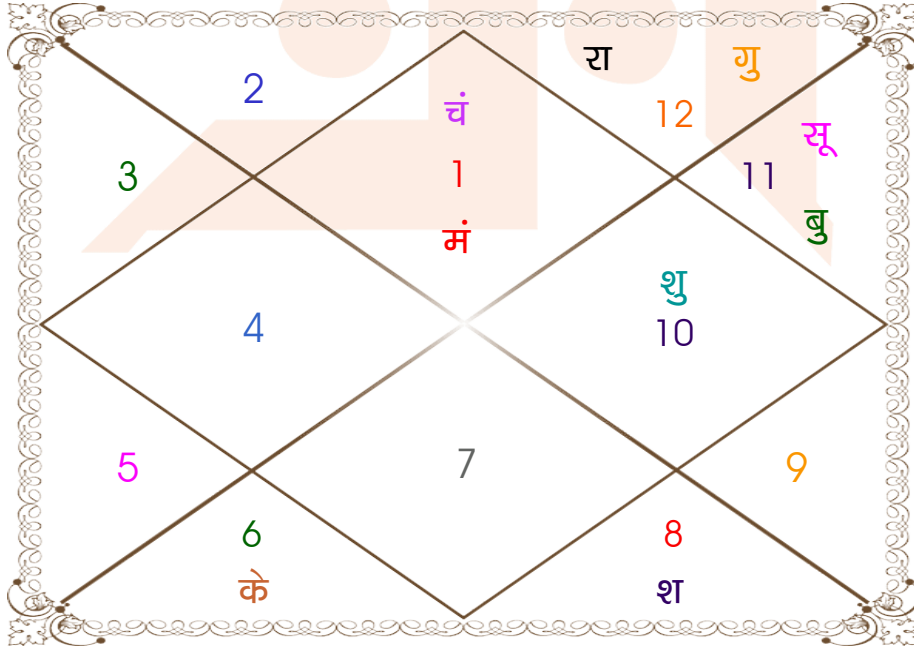
मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा ल गु	मं चं		
बु सू			
शु			
	श		के

लग्न कुंडली

	मं चं	गु ल	रा बु सू
			शु
	के		श

विंशोत्तरी
शुक्र 5वर्ष 4मा 13दि
शुक्र

05/03/1987

17/07/2092

शुक्र	17/07/1992
सूर्य	18/07/1998
चन्द्र	17/07/2008
मंगल	18/07/2015
राहु	17/07/2033
गुरु	17/07/2049
शनि	17/07/2068
बुध	17/07/2085
केतु	17/07/2092

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 4मा 3दि
भद्रिका

08/07/2019

07/07/2024

भद्रिका	18/03/2020
उल्का	16/01/2021
सिद्धा	06/01/2022
संकटा	16/02/2023
मंगला	08/04/2023
पिंगला	18/07/2023
धान्या	17/12/2023
भ्रामरी	07/07/2024

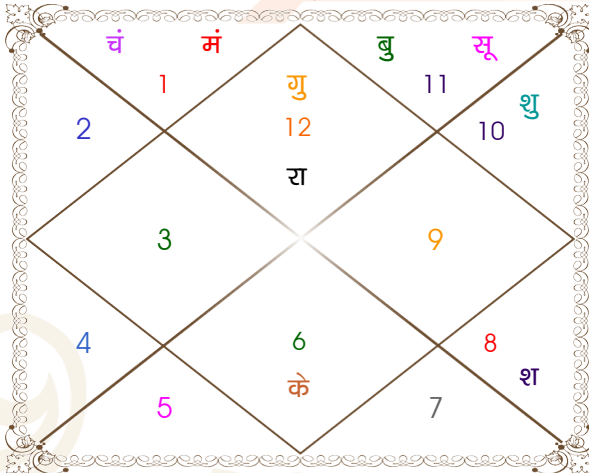
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
लग्न	मीन	07:48:46	---	--	--	--	नेक
सूर्य	कुम्भ	20:16:24	शत्रु राशि	--	--	--	नेक
चन्द्र	मेष	23:05:13	सम राशि	--	हाँ	--	नेक
मंगल	मेष	14:53:27	स्वराशि	--	हाँ	--	नेक
बुध	व कुम्भ	09:35:27	सम राशि	--	--	--	मन्दा
गुरु	मीन	06:52:00	स्वराशि	--	--	--	मन्दा
शुक्र	मकर	08:21:49	मित्र राशि	--	--	--	नेक
शनि	वृश्चिक	26:55:11	शत्रु राशि	--	--	--	नेक
राहु	मीन	18:06:07	सम राशि	--	--	--	मन्दा
केतु	कन्या	18:06:07	शत्रु राशि	--	--	--	नेक

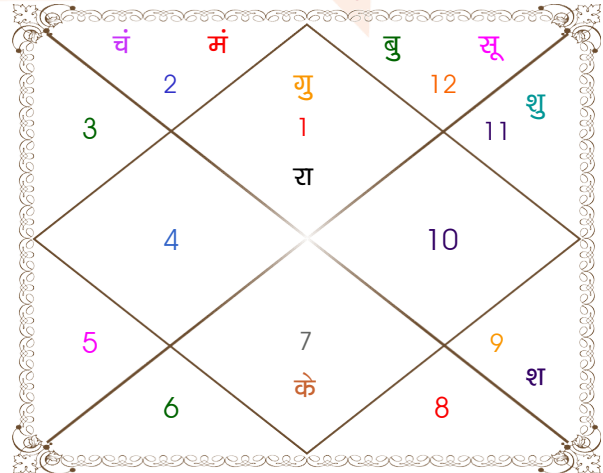
भाव स्थिति

खाना नं.	मालिक	पक्का घर	किस्मत जगानेवाला	सोया	उच्च	नीच
1	मंगल	सूर्य	मंगल	--	सूर्य	शनि
2	शुक्र	गुरु	चंद्र	--	चंद्र	--
3	बुध	मंगल	बुध	हाँ	राहु	केतु
4	चंद्र	चंद्र	चंद्र	हाँ	गुरु	मंगल
5	सूर्य	गुरु	सूर्य	हाँ	--	--
6	बुध	बुध,केतु	केतु	--	बुध,राहु	शुक्र,केतु
7	शुक्र	शुक्र,बुध	शुक्र	--	शनि	सूर्य
8	मंगल	मंगल,शनि	चंद्र	हाँ	--	चंद्र
9	गुरु	गुरु	शनि	--	केतु	राहु
10	शनि	शनि	शनि	हाँ	मंगल	गुरु
11	शनि	शनि	गुरु	--	--	--
12	गुरु	गुरु,राहु	राहु	--	शुक्र,केतु	बुध,राहु

लग्न कुंडली



लालकिताब कुंडली



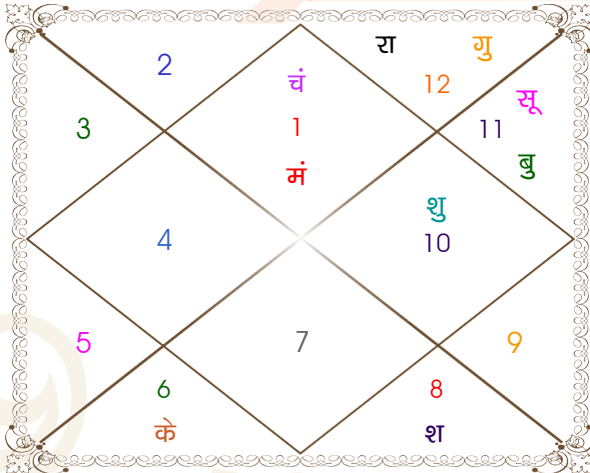
मैत्रीचक्र सारिणी

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
मंगल	मित्र	मित्र	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
बुध	मित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	सम	मित्र
शनि	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	सम	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	---	मित्र
केतु	शत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---

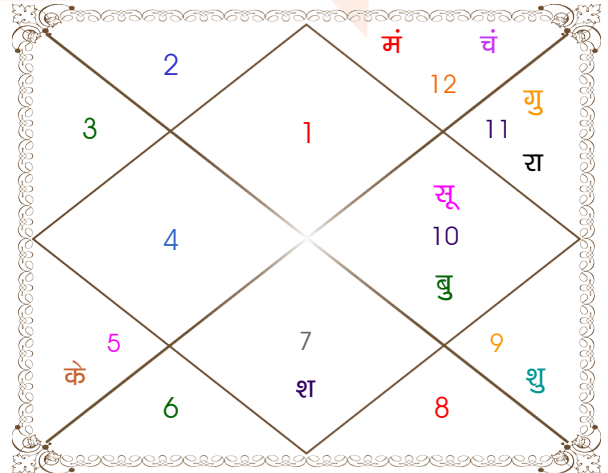
ग्रह/राशि फल

ग्रह	वर्णन	फल
सूर्य	सुख की नींद, मगर पराई आग से जल मरने वाला।	--
चंद्र	स्वयं पैदा की हुई माया की देवी।	--
मंगल	धर्म मूर्त।	--
बुध	नेक लंबी आयु मगर रात की नींद उजाड़ने वाला।	राशि
गुरु	राजगुरु या गद्दीनशीं साधु।	--
शुक्र	माया के ताल्लुक में घूमता हुआ व्यक्ति।	--
शनि	कलम विधाता मकाना मर्दा।	राशि
राहु	सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी, धन का प्रतीक।	राशि
केतु	शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता।	--

चन्द्र कुंडली



लालकिताब चन्द्र



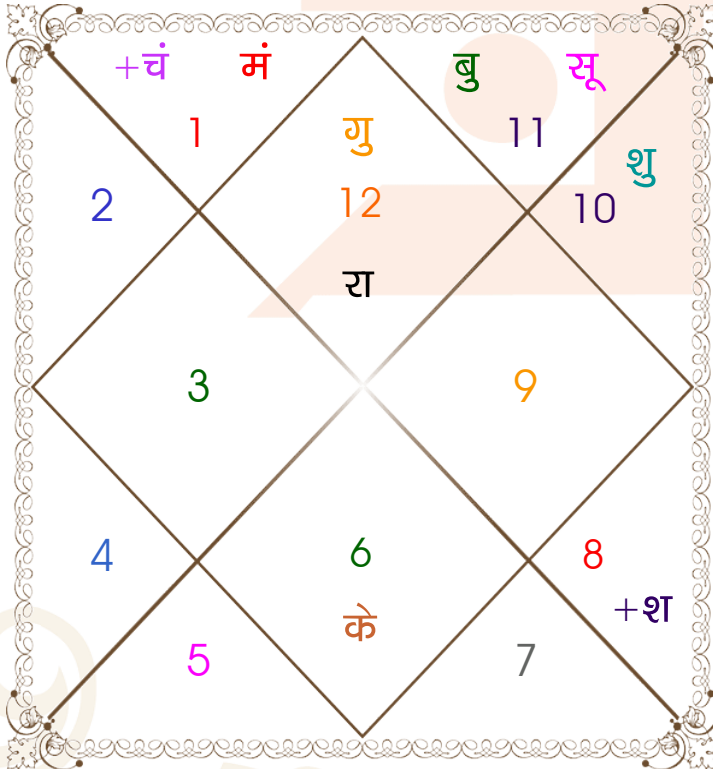
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	07:48:46	461:49:07	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
सूर्य			कुंभ	20:16:24	01:00:08	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	23:05:13	12:31:19	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगल			मेष	14:53:27	00:41:07	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
बुध	व	अ	कुंभ	09:35:27	00:50:10	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
गुरु			मीन	06:52:00	00:14:15	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			मक	08:21:49	01:10:19	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	26:55:11	00:02:34	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	18:06:07	00:01:49	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु			कन्या	18:06:07	00:01:49	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:43:48	00:01:24	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप			धनु	13:58:12	00:01:10	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो	व		तुला	16:09:53	00:00:44	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	07:23:28	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	राहु	--

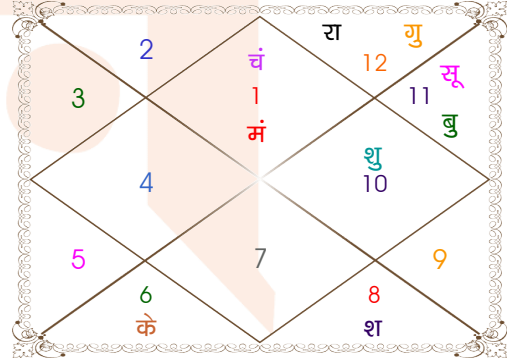
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:37

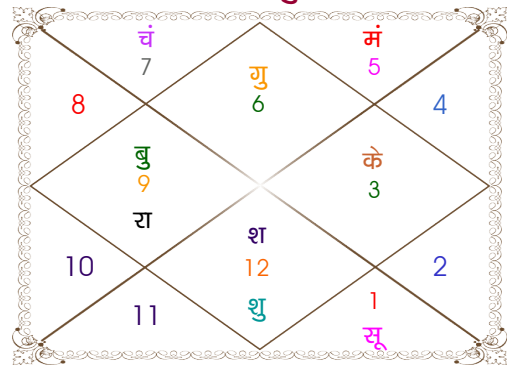
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 22:44:33	मीन 07:48:46
2	मीन 22:44:33	मेष 07:40:20
3	मेष 22:36:07	वृष 07:31:54
4	वृष 22:27:41	मिथुन 07:23:28
5	मिथुन 22:27:41	कर्क 07:31:54
6	कर्क 22:36:07	सिंह 07:40:20
7	सिंह 22:44:33	कन्या 07:48:46
8	कन्या 22:44:33	तुला 07:40:20
9	तुला 22:36:07	वृश्चिक 07:31:54
10	वृश्चिक 22:27:41	धनु 07:23:28
11	धनु 22:27:41	मकर 07:31:54
12	मकर 22:36:07	कुम्भ 07:40:20

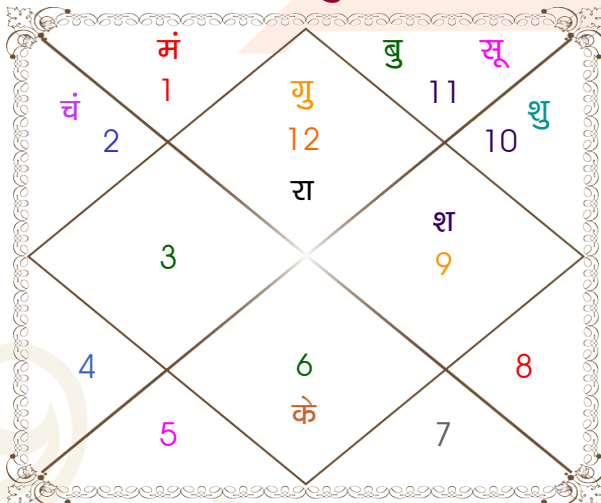
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	07:48:46
2	मेष	13:01:13
3	वृष	11:56:26
4	मिथुन	07:23:28
5	कर्क	02:58:08
6	सिंह	02:14:50
7	कन्या	07:48:46
8	तुला	13:01:13
9	वृश्चिक	11:56:26
10	धनु	07:23:28
11	मकर	02:58:08
12	कुम्भ	02:14:50

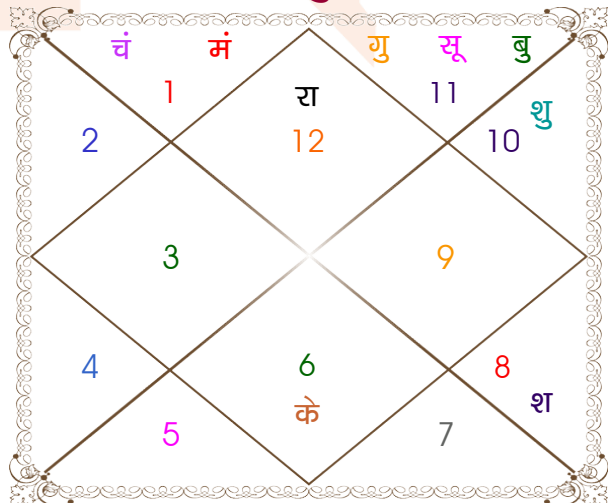
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



लालकिताब दशा

शनि 6 वर्ष 05/03/1987 04/03/1993	राहु 6 वर्ष 04/03/1993 05/03/1999	केतु 3 वर्ष 05/03/1999 05/03/2002	गुरु 6 वर्ष 05/03/2002 04/03/2008	सूर्य 2 वर्ष 04/03/2008 05/03/2010
राहु 04/03/1989 बुध 05/03/1991 शनि 04/03/1993	मंगल 05/03/1995 केतु 04/03/1997 राहु 05/03/1999	शनि 04/03/2000 राहु 04/03/2001 केतु 05/03/2002	केतु 04/03/2004 गुरु 05/03/2006 सूर्य 04/03/2008	सूर्य 03/11/2008 चंद्र 04/07/2009 मंगल 05/03/2010
चंद्र 1 वर्ष 05/03/2010 05/03/2011	शुक्र 3 वर्ष 05/03/2011 05/03/2014	मंगल 6 वर्ष 05/03/2014 04/03/2020	बुध 2 वर्ष 04/03/2020 05/03/2022	शनि 6 वर्ष 05/03/2022 04/03/2028
गुरु 04/07/2010 सूर्य 03/11/2010 चंद्र 05/03/2011	मंगल 04/03/2012 शुक्र 04/03/2013 बुध 05/03/2014	मंगल 04/03/2016 शनि 05/03/2018 शुक्र 04/03/2020	चंद्र 03/11/2020 मंगल 04/07/2021 गुरु 05/03/2022	राहु 04/03/2024 बुध 05/03/2026 शनि 04/03/2028
राहु 6 वर्ष 04/03/2028 05/03/2034	केतु 3 वर्ष 05/03/2034 04/03/2037	गुरु 6 वर्ष 04/03/2037 05/03/2043	सूर्य 2 वर्ष 05/03/2043 04/03/2045	चंद्र 1 वर्ष 04/03/2045 05/03/2046
मंगल 05/03/2030 केतु 04/03/2032 राहु 05/03/2034	शनि 05/03/2035 राहु 04/03/2036 केतु 04/03/2037	केतु 05/03/2039 गुरु 04/03/2041 सूर्य 05/03/2043	सूर्य 03/11/2043 चंद्र 04/07/2044 मंगल 04/03/2045	गुरु 04/07/2045 सूर्य 03/11/2045 चंद्र 05/03/2046
शुक्र 3 वर्ष 05/03/2046 04/03/2049	मंगल 6 वर्ष 04/03/2049 05/03/2055	बुध 2 वर्ष 05/03/2055 04/03/2057	शनि 6 वर्ष 04/03/2057 05/03/2063	राहु 6 वर्ष 05/03/2063 04/03/2069
मंगल 05/03/2047 शुक्र 04/03/2048 बुध 04/03/2049	मंगल 05/03/2051 शनि 04/03/2053 शुक्र 05/03/2055	चंद्र 03/11/2055 मंगल 04/07/2056 गुरु 04/03/2057	राहु 05/03/2059 बुध 04/03/2061 शनि 05/03/2063	मंगल 04/03/2065 केतु 05/03/2067 राहु 04/03/2069
केतु 3 वर्ष 04/03/2069 04/03/2072	गुरु 6 वर्ष 04/03/2072 05/03/2078	सूर्य 2 वर्ष 05/03/2078 04/03/2080	चंद्र 1 वर्ष 04/03/2080 04/03/2081	शुक्र 3 वर्ष 04/03/2081 04/03/2084
शनि 05/03/2070 राहु 05/03/2071 केतु 04/03/2072	केतु 05/03/2074 गुरु 04/03/2076 सूर्य 05/03/2078	सूर्य 03/11/2078 चंद्र 05/07/2079 मंगल 04/03/2080	गुरु 04/07/2080 सूर्य 03/11/2080 चंद्र 04/03/2081	मंगल 05/03/2082 शुक्र 05/03/2083 बुध 04/03/2084
मंगल 6 वर्ष 04/03/2084 05/03/2090	बुध 2 वर्ष 05/03/2090 04/03/2092	बुध 2 वर्ष 05/03/2090 04/03/2092	बुध 2 वर्ष 05/03/2090 04/03/2092	बुध 2 वर्ष 05/03/2090 04/03/2092
मंगल 05/03/2086 शनि 04/03/2088 शुक्र 05/03/2090	चंद्र 03/11/2090 मंगल 05/07/2091 गुरु 04/03/2092	चंद्र 03/11/2090 मंगल 05/07/2091 गुरु 04/03/2092	चंद्र 03/11/2090 मंगल 05/07/2091 गुरु 04/03/2092	चंद्र 03/11/2090 मंगल 05/07/2091 गुरु 04/03/2092

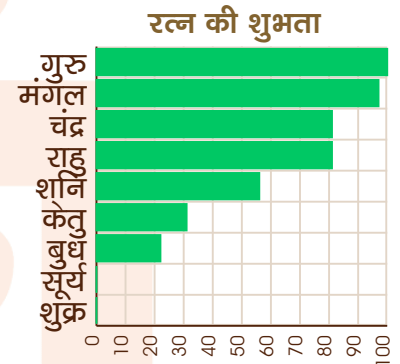
नोट : 35 साला लाल किताब दशा लगभग तीन चक्र के लिए दी गई है।
उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लगनों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	97%	धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	81%	धन, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	81%	स्वास्थ्य
नीलम	शनि	56%	भाग्योदय, धनार्जन, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	31%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पन्ना	बुध	22%	व्यय, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	हानि, पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	17/07/1992	0%	69%	97%	34%	100%	22%	62%	88%	44%
सूर्य	18/07/1998	22%	88%	100%	22%	100%	0%	38%	69%	6%
चंद्र	17/07/2008	9%	94%	97%	34%	100%	0%	56%	69%	6%
मंगल	18/07/2015	9%	88%	100%	0%	100%	0%	56%	69%	44%
राहु	17/07/2033	0%	69%	84%	22%	100%	9%	62%	94%	6%
गुरु	17/07/2049	9%	88%	100%	0%	100%	0%	56%	81%	31%
शनि	17/07/2068	0%	69%	84%	34%	100%	9%	69%	88%	6%
बुध	17/07/2085	9%	69%	97%	47%	100%	9%	56%	81%	31%
केतु	17/07/2092	0%	69%	100%	22%	100%	9%	38%	69%	53%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से

वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज, मूंगा, मोती व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम शुभ रत्न है। इसकी शुभता स्व-दशा या मित्र दशाओं में बढ़ जाती है। अतः इस रत्न को इसकी शत्रु दशा में न पहनकर मित्रादि की दशा में पहनकर इसके शुभ फलों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसकी शत्रु दशा में आप रुद्राक्ष पहनकर या दान, मंत्र जाप आदि से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना, माणिक्य व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरुचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं दसमेश है। आप गुरु रत्न पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो सकता है। माता-पिता सुख में बढ़ोतरी करने में पुखराज रत्न की शुभता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त पुखराज रत्न आपकी आरोग्यता को बढ़ाएगा। पारिवारिक सुख प्राप्ति के लिए भी पुखराज रत्न की शुभता आपके लिए बनी हुई है। पुखराज रत्न दशमेश का रत्न होने के कारण आपके आजीविका क्षेत्र को शुभ रख आपको उन्नति और सफलता के प्रयाप्त अवसर दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। मंगल के शुभफल प्राप्ति के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण कर आप सहनशीलता का परिचय देंगे। वाकशक्ति का चातुर्य के साथ प्रयोग करेंगे। धन का प्रवाह तीव्र होगा। पराक्रम के कार्यों में आपकी अभिरुचि जागृत होगी। मूंगा रत्न आपके जोश और ऊर्जा शक्ति का भी विस्तार करेगा। इस रत्न को धारण करने के बाद आप जीवन की बाधाओं का साहस के साथ सामना करने लगेंगे। पहल क्षमता भी आपकी पहले से अधिक बढ़ जायेगी।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीयेश एवं नवमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। मूंगा रत्न प्रभाव से आपकी धन वृद्धि हो सकती है। इसकी शुभता से आपकी पारिवारिक वृद्धि हो सकती है। माता-पिता का सुख सहयोग आपको प्राप्त होगा। मूंगा रत्न भूमि-भवन संपत्ति का सुख आपको दे सकता है। रत्न शुभता आपके दांपत्य

जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। यह रत्न आपको आय के उत्तम साधन उपलब्ध करा सकता है। भाग्य भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न आपके भाग्योदय का रत्न सिद्ध हो सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न आपके लिए शुभ रत्न है इससे आप मधुरभाषी, सहनशील एवं शांति प्रिय व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पारिवारिक स्नेह को सुखद बनाये रखने में मोती अहम भूमिका निभा सकता है। मोती रत्न से धन-धान्य और परिवार में सम्मान की प्राप्ति होगी। मोती रत्न आपकी त्याग भावना, बुद्धिमानी, चंचलता और यश को बढ़ायेगा। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आपका मोती रत्न धारण करना शुभ रहेगा। इस रत्न की शुभता से परिवार में धन आगमन बना रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में चंद्र पंचमेश है। पंचमेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र की शुभता वृद्धि कर सकते हैं। यह रत्न आपको मन की शांति देगा तथा आपकी मानसिक चिंताओं को दूर करेगा। मोती रत्न की शुभता से आपके यश एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप मधुरभाषी, उच्च मनोबल, दूरदर्शी एवं योग्य व्यक्ति बन सकते हैं। इस रत्न की शुभता से अनेक विद्याओं का धनी बना सकती है। मोती शुभ रत्न होकर आपके संतान पक्ष को प्रबल रख सकता है। रत्न प्रभाव से जीवन साथी के प्रति आपकी स्नेह वृद्धि हो सकती है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष

आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शनि एकादशेश एवं द्वादशेश है। आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न शुभ होकर आपको उत्तम लाभ, मोक्ष, विदेश यात्रा एवं ऐश्वर्य प्राप्ति

में शुभ हो सकता है। यह रत्न आपके आय मार्ग की बाधाओं को दूर कर सकता है। व्ययों पर नियंत्रण रखने में शनि रत्न लाभकारी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न शुभता से आपको बाहरी मामलों का प्रतिनिधित्व करने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आय बढ़ने और व्ययों पर नियंत्रण होने से संचित धन भी स्वतः ही बढ़ेगा। मेहनत, निष्ठा बढ़ सकती है और मानसिक चिंताओं में कमी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपका व्यापारिक क्षेत्र में धन अधिक खर्च हो सकता है। कई बार आपका धन नष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक चिंताएं दे सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपके द्वारा पिता का संचित धन भी नष्ट हो सकता है। यह रत्न वैवाहिक सुख कम कर सकता है। मित्रों से आपको कष्ट दिला सकता है। रत्न धारण करने के बाद यात्राएं कष्टकारी या असफल हो सकती हैं। केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपको शत्रुओं का भय हो सकता है। मित्रों से कष्ट मिल सकते हैं। कुसंगति के मित्र मिल सकते हैं। साथ ही यह रत्न वैवाहिक सुख में भी कमी कर सकता है।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको जीवन के कुछ सुनहरे अवसरों को खोना पड़ सकता है। बौद्धिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको समय समय पर हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा किए गये नियोजन कार्य असफल हो सकते हैं। समझ

बूझ की कमी भी आपको अवगत हो सकती है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको शेयर बाजार से जुड़े क्षेत्रों में हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके द्वारा संचित धन आपके काम न आकर दूसरों के काम ज्यादा आ सकता है। बुध रत्न पन्ना आपमें व्यवहारिकता की भी कमी कर सकता है। पिता के स्नेह में कमी की स्थितियां भी यह रत्न आपमें बना सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में बुध चतुर्थेश एवं सप्तमेश है। बुध रत्न पन्ना आपकी शिक्षा में रुकावटें देने के बाद पूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से विलम्ब के बाद आपको सरकारी नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। पन्ना रत्न आपके मातृ पक्ष, हर प्रकार की संपत्ति और घर गृहस्थी के सुखों में कमी कर सकता है। पन्ना रत्न आपके दांपत्य के वातावरण को कष्टमय बना सकता है। साझेदारी कार्यों में भी रत्न प्रभाव से प्रतिकूल फल प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव से आपके माता से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। पन्ना रत्न कीर्ति, धन एवं दुष्ट संगति में आ सकते हैं। पन्ना रत्न पहनने पर आप अपव्ययी हो सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते हैं। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते हैं। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में सूर्य षष्ठेश है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी शिक्षा को अपूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यक्तित्व के गुणों में कमी हो सकती है। समस्याओं का समाधान निकालने की जगह समस्याओं से भागने की प्रवृत्ति यह रत्न आपमें विकसित कर सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपको सरकारी क्षेत्रों में नौकरी प्राप्ति में संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से कोर्ट कचहरी के मामलों में आपको समझौते करने के लिए आप बाध्य हो सकते हैं। इसके अलावा माणिक्य रत्न रोग, ऋण एवं शत्रु पक्ष की चिंताओं में समय समय पर वृद्धि करता रहेगा। आत्मविश्वास की कमी आपकी उन्नति के विकास को बाधित कर सकती है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आय क्षेत्रों की सफलता प्रभावित हो सकती है। बुद्धि चातुर्य के असहयोग के कारण आपको विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्धि में कमी हो सकती है। इस रत्न से आपके नियमित रूप से धनागमन बाधित हो सकता है। दिनों दिन धनवृद्धि में अस्थिरता आ सकती है। आपके घर में सभी प्रकार की समृद्धि और सम्पन्नता के पक्ष से भी हीरा रत्न अनुकूल फलदायक नहीं होगा। अधिक से अधिक धन पाने के लिए आप सत्य से विमुख हो सकते हैं। इमारतें बनवाने का कार्य आपको हानि दे सकता है। विवाह के माध्यम से आपको धनहानि हो सकती है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीयेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके व्यक्तित्व के तेज में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके कार्यों की निपुणता में न्यूनता देगा। यह रत्न साहस और पराक्रम दोनों का सहयोग आपको प्राप्त नहीं होने देगा। विषयों को सूक्ष्मता से समझने का गुण यह रत्न आपको दे सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको वात रोग दे सकता है। वैवाहिक जीवन के सुख भी रत्न प्रभाव से बाधित हो सकते हैं। इस रत्न को धारण करने के बाद आपकी जीवनशैली घूमने फिरने की अधिक हो सकती है। हीरा रत्न जीवन के विशेष विषयों में आपको परिवर्तन करना सुखद लग सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु

(18/07/2015 - 17/07/2033)

राहु की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(17/07/2033 - 17/07/2049)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, मोती व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(17/07/2049 - 17/07/2068)

शनि की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों

को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(17/07/2068 - 17/07/2085)

बुध की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(17/07/2085 - 17/07/2092)

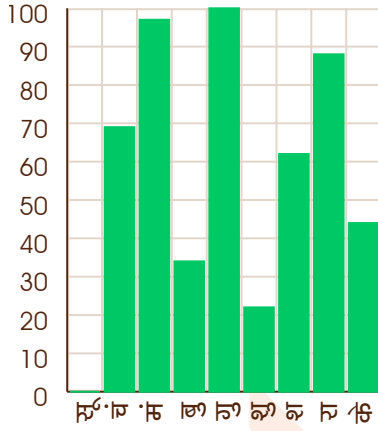
केतु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

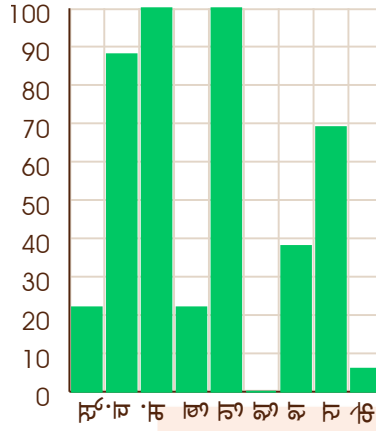
नीलम रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, हीरा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

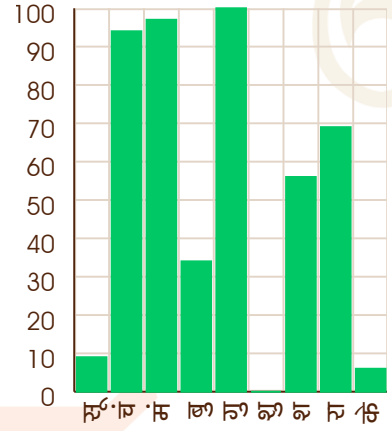
शुक्र - 17/07/1992



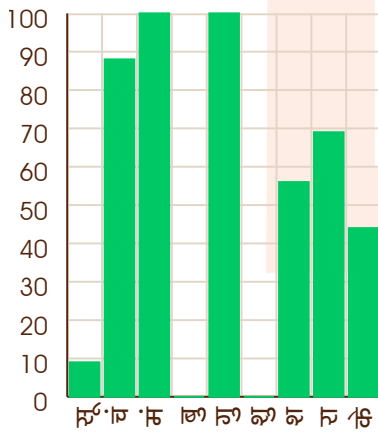
सूर्य - 18/07/1998



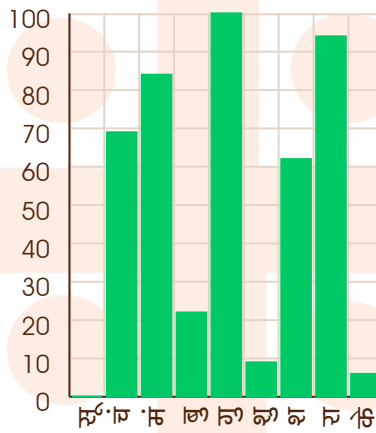
चन्द्र - 17/07/2008



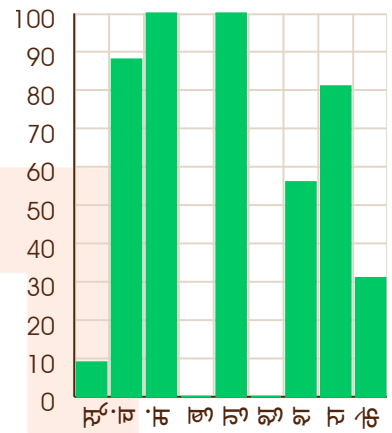
मंगल - 18/07/2015



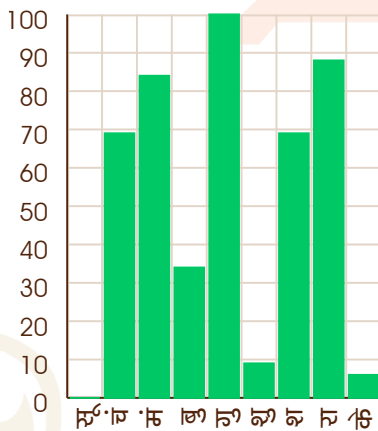
राहु - 17/07/2033



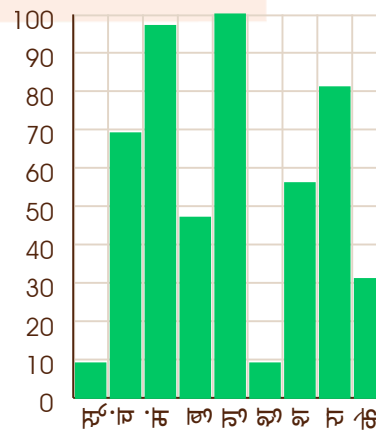
गुरु - 17/07/2049



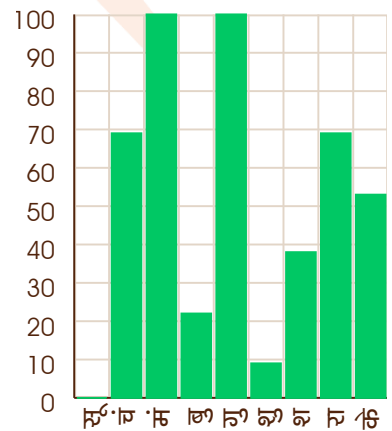
शनि - 17/07/2068



बुध - 17/07/2085



केतु - 17/07/2092



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लहसुनिया

आपका जन्म मीन राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह गुरु होता है। लहसुनिया रत्न केतु ग्रह के लिये धारण किया जाता है केतु का फल मंगल के समान माना जाता है। मंगल मीन राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि मंगल की वृश्चिक राशि मीन लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः मीन राशि के लग्न वाले जातकों को लहसुनिया रत्न धारण करके केतु या मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। केतु ग्रह के लिये लहसुनिया रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी केतु आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को टोना, टोटका जैसे अशुभ फलों से मुक्ति व राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को नाना-नानी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। केतु ग्रह मोक्ष का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको कोई गंभीर संक्रामक रोग हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

लहसुनिया को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य सभी ग्रहों का राजा होता है। लहसुनिया केतु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। लहसुनिया को यदि मंगलवार के साथ-साथ केतु के नक्षत्र अर्थात् अश्विनी, मघा और मूल में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लहसुनिया को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, केतु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

केतु का मंत्र - ॐ कं केतवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि केतु से संबंधित पदार्थ जैसे नारियल, सतनाजा सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो लहसुनिया की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन केतु का 108 बार स्नानादि के पश्चात

मंत्र पाठ करें। यह लहसुनिया की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाना भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मीन लग्न वाले जातक यदि लहसुनिया की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रमा के साथ जन्म कुंडली में स्थित है। अतः आप चन्द्र कुण्डली से मांगलिक हैं। परन्तु मंगल का योग चन्द्रमा से होने पर आपका मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं शान्त वातावरण में सम्पन्न होगा। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आप एक स्वस्थ पुरुष होंगे तथा मानसिक रूप से भी कभी विचलित नहीं रहेंगे। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से सुख संसाधनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप चल या अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त कर सकेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे स्वभाव से क्रोध के भाव को प्रदर्शित करेंगी। इससे दाम्पत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक कुशलता बनी रहेगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होते रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से शान्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में मांगलिक दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो आप अत्यन्त ही भाग्यशाली पुरुष सिद्ध होंगे। आप भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। साथ ही समाज में भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। आपकी पत्नी भी एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके परस्पर संबंध भी हमेशा मधुर

रहेंगे एवं अनावश्यक तनाव तथा कटुता से आप मुक्त ही रहेंगे।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय समान भाव में मंगल की यदि आवश्यक न हो तो उपेक्षा ही करें क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिससे यदा कदा आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझ कर इस विषय में अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।



कालसर्प योग

अग्ने राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है ।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं ।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं ।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे ।

अंक ज्योतिष फल

नाम	Pradeep
जन्म तिथि	05/03/1987
मूलांक	5
भाग्यांक	6
नामांक	6
मूलांक स्वामी	बुध
भाग्यांक स्वामी	शुक्र
नामांक स्वामी	शुक्र
मित्र अंक	3, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4
सम अंक	1, 7, 8
मुख्य वर्ष	2003,2012,2021,2030,2039,2048,2057,2066
शुभ आयु	16,25,34,43,52,61,70,79
शुभ वार	गुरु, बुध, शुक्र
शुभ मास	मार्च, मई, सित
शुभ तारीख	5, 14, 23
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना,बिलौर,मरगज
अनुकूल देव	लक्ष्मीनारायण
शुभ धातु	स्वर्ण
शुभ रंग	हरित
मंत्र	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः वृहस्पतये नमः
शुभ यंत्र	गुरु यंत्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक पाँच होता है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट रहेंगे। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा। जहाँ लेन-देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक्पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी रहेंगे। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी-कभी हानियों का भी सामना करेंगे।

आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी-कभी चिड़चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगे। इस कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा।

मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण-अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन-पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओं के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 6 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 6 का स्वामी शुक्र है। मूलांक 5 और भाग्यांक 6 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक-भाग्यांक का मिलाजुला फल प्राप्त होगा। आप चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला के द्वारा अपना रोजगार-व्यापार चलाएंगे। आपको विभिन्न कलाओं में सफलाएं प्राप्त होंगी तथा आप इनके माध्यम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। स्वभाव से आप कोमल हृदय के व्यक्ति रहेंगे तथा समाज में शीघ्र घुलने-मिलने की कला में निपुण रहेंगे। धन संग्रह की अपेक्षा आप भौतिक

सुख-साधन जोड़ने पर अधिक ध्यान देंगे, हालांकि आपके पास संपत्ति अच्छी एकत्रित होगी एवं अपने कार्य के द्वारा काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को आप प्राप्त करेंगे। जीवन के मध्य अवस्था से आपकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत होती चली जाएगी, जो अंतिम अवस्था तक स्थायी रहेगी। समाज में आपको पर्याप्त मात्रा में मान-सम्मान प्राप्त होगा एवं लोग आपको समयोचित आदर प्रदान करेंगे।

आपका भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 33 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 42 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की मित्रता 3 और 9 से है तथा भाग्यांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 3, 5, 6, 9 के अंक विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, मई, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करे तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 6 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 3, 5, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 5, 6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनशाली रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

लग्न फल

आपका जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कन्या का नवमांश एवं मीन का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादिक ज्योतिषीय आकृति आपके जीवन को धन संपत्ति से युक्त आमोद-प्रमोद एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण आनंदमय जीवन बिताने के साधनों से युक्त करता है।

प्रायः हर दशा में ज्योतिषीय प्रभाव आपका पक्षधर है। यदि आप अपने हस्तगत कार्य व्यवसाय को समय पर सुव्यवस्थित ढंग एवं समर्पण की भावना से संपादित कर लिए तो आपका जीवन सफल होने की संभावना है, बर्सेते कि आप सकारात्मक ढंग से कार्यों का संपादन करें। फलस्वरूप यह आपके लिए उन्नति कारक होगा। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आप वासनात्मक प्रवृत्ति को बहुत महत्त्व देकर इन कार्यों से संबंधित रहते हैं। यदि आप इस प्रवृत्ति हेतु सतर्कता नहीं बरतें तो यह वासना आपको मिट्टी पलीत कर देगा। अर्थात् आपका विनाश कर देगा। आप इनका उन्मूलन करें अन्यथा इस उत्तेजना के कारण आपके जीवन की ललिमा नष्ट हो जाएगी तथा इस प्रवृत्ति के कारण मात्र आपका परिवार ही अस्त-व्यस्त नहीं हो जाएगा। बल्कि यह आपको अकर्मण्य बना कर आपके कार्य कलाप से भी दिशा हीन बना देगा। परंतु यदि आप इस प्रवृत्ति को समाप्त कर दिए तो आप बहुत अच्छी प्रकार उन्नति कर सकेंगे। आप धन संचय कर सकेंगे। इस प्रकार आप मात्र अपने उपार्जन को ही नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि आप धन संपत्ति भी सर्वथा अर्जित करेंगे। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप अपने प्रतिपक्षी को परास्त कर देंगे जो कि आपके कार्य-व्यवसाय को नष्ट करने का प्रयास करेगा।

आप मात्र एक सुखद एवं अभिमंत्रित भवन के स्वामी होंगे। बल्कि हर दशा में अपने मित्रों के अपना कर अपनी मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आप समाजिक क्लब के सदस्य होंगे। आप अपनी भद्रता एवं अतिथ्य सत्कार के कारण अपने मित्र मंडली में प्रख्यात भी होंगे। परंतु आपको कुछ समस्याओं से मुठ-भेड़ भी करना पड़ेगा। आप अन्य लोगों के लिए किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाने वाले बल्कि अतिशय विश्वास पात्र हैं। आप किसी के भी साथ सामंजस्य एवं सकारात्मक फल प्राप्ति की उत्कंठा रखते हैं। जब आप किसी भी मित्र के साथ प्रतिज्ञा करते हैं उसे बहुत अच्छी प्रकार निभाते हैं। परंतु क्या वे इस प्रकार पीछे भी लौट सकते हैं। नहीं। वास्तव में संयोगवश ऐसा कुछ घटित हो जाए उस परिस्थिति में जो आपसे संबंधित है। वे लोग आपकी आवश्यकता के समय अथवा जरूरत पड़ने पर अपने कार्य को त्याग कर आपके पक्ष में अपना योगदान करते हैं। अतएव आप उन पर अत्यंत भरोसा कर के अन्यो को उपेक्षित अथवा वहिष्कृत कर देते हैं।

यदि आप सतर्कता पूर्वक मर्यादित पथ पर चलते हैं तो आपके पारिवारिक सदस्य तथा सामान्य जन आपके गुणों एवं साहसिक प्रवृत्ति तथा दानशीलता हेतु आपकी प्रशंसा करेंगे। आप धार्मिक प्रवृत्ति के प्राणी हैं। आप तीर्थ स्थलों का परिदर्शन करेंगे एवं पौढ़वस्था में आप भक्ति के प्रदर्शन में अभिरुचि रखेंगे तथा धर्म-दर्शन एवं पराविज्ञान में दक्ष हो जाएंगे। आप इस विषय में बहुत अधिक ज्ञानार्जन कर सकते हैं। यदि आप चयन करेंगे तो कोई छोटा धर्मोपदेशक भी बन सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन गुरुवार, मंगलवार एवं रविवार का दिन उत्तम हैं। शेष साप्ताहिक तीन दिन यथा बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सामान्य फलदायी है।

आपके लिए अंकों में उत्तम एवं विश्वसनीय अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु हर दशा में 8 अंक अनुकूल नहीं है।

आपके लिए रंगों में रंग पीला, लाल, गुलाबी एवं नारंगी रंग आपके लिए अनुकूल हैं। परंतु नीला रंग आपके लिए किसी भी दशा में अनुकूल नहीं है।



ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की

स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरहृदय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, कोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधू बनना चाहो तो साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगे। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद रहेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगे। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिलेगा या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधवा स्त्री से संबंध होंगे, अमानत में खरानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाले होंगे। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों, लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगे। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधवा स्त्री से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खरानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल दें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से यह आपके भाग्य को जगाता है। धन-संपदा से संपन्न रहेंगे। आपके वंश की वृद्धि होगी। पैतृक सुख और संपत्ति से पूरे रहेंगे। आपके घर में लक्ष्मी की वृद्धि होगी। आपको जद्दी-जायदाद और विरासत का हिस्सा अवश्य मिलेगा। आपको वृद्धावस्था में सभी शुभ फल अवश्य मिलेंगे। बुढ़ापे में सुखकारक समय होगा। आपको भाई का सुख अवश्य मिलेगा। आप सफल प्रेमी होंगे। आप धनवान और उच्चाधिकारी बनेंगे। आपके ससुराल की माली-हालत अच्छी होगी। पिता और ससुराल से धन-संपत्ति का लाभ मिलता है। 48 वर्ष आयु तक माता का सुख मिलता है। परिवार में किसी के जुड़वा बच्चे भी पैदा हो सकते हैं। सफेद चीजों (चावल-चांदी, दूध आदि) से अधिक लाभ मिल सकता है।

यदि आपने बूढ़ी स्त्री या माता का अपमान किया, ससुराल वालों को तंग करके धन प्राप्त किया, मांस-मदिरा का सेवन किया, घर में मंदिर बना कर पूजा-पाठ किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 25 और 34 वर्ष की आयु में गरीबी का सामना करना पड़ सकता है। आप दुनियावी प्रेम संबंधों के कारण बर्बाद हो सकते हैं। आपको संतान में विघ्न या संतान का सुख देर से मिलेगा। आपको बहन का सुख नहीं मिले ऐसा संभव है। बहन-बेटी या परिवार की किसी लड़की को मिरगी का दौरा पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर के मंदिर में शिवलिंग, मूर्तियां, घंटी, शंख आदि न रखें।
2. शराब और मादक वस्तुओं का प्रयोग न करें।

उपाय :

1. माता या बूढ़ी स्त्री के पैर छूकर आशीर्वाद लें।
2. माता से चावल-चांदी, सफेद कपड़े की थैली में लेकर पास रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दयालु, रक्षक, भाई और मित्रों के पालनहार, आप दूसरों की जरूरत हमेशा पूरी करेंगे। आप किसी संस्था के प्रधान भी हो सकते हैं। आप बहुत लोगों को सहारा देने वाले होंगे। आप दूसरों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे। आपको ससुराल से सहायता मिलेगी। आप छोटे भाई से पुत्र जैसा प्यार करेंगे और उसे सहायता देंगे। छोटे भाई की सहायता से आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सहायता करते रहेंगे। इस वजह से आप भी भरपूर रहेंगे। आपको दूसरों की भलाई के लिए धन-संपत्ति मिलती रहेगी। आप दूसरों के लिए लंगर लगाएंगे। आप नेक और पक्के इरादे के हैं। आप परिश्रम से धनी होंगे। आपको खुराक, पोशाक तथा अन्य जीवन के सुख प्राप्त होंगे। जरूरत पड़ने पर खुद ब खुद पैसे मिल जाएंगे। आपको भगवान की कृपा से बहुत धन मिलेगा। आप अधिकारी बन कर हुकूमत करेंगे। आप तीर्थ यात्रा करने से शुभ फल को प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी दौलत में बढ़ोत्तरी होगी। ससुराल पक्ष से सुखी रहेंगे।

यदि आपने दूसरों के धन-स्त्री पर बुरी नजर रखी, बुरी आदतों के शिकार हुए या छल-कपट करके भाई-बंधुओं, मित्रों के साथ ठगी की तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से अगर विद्या में रुकावट, जरूरत पड़ने पर आपको धन मिलता रहेगा। नौकरी-व्यापार में बार-बार हानि हो सकती है। 28 वर्ष से पहले बड़े भाई को शरीर कष्ट संतान की चिंता, धन हानि होगी। यदि आपका बड़ा भाई है तो उसका सुख आपको नहीं मिलेगा या वह आपसे हालत में कमजोर होगा या आप और आपका भाई निःसंतान भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय

करें।

परहेज :

1. लड़ाई-झगड़े से दूर रहें।
2. मेहमानों की सेवा से मुंह न फेरें।

उपाय :

1. बच्चों को दोपहर के समय गुड़-गेहूं बांटें।
2. नाश्ते में मीठा भोजन करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे-लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :

1. स्टेनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी कुंडली में वृहस्पति पहले खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप एक पढ़े-लिखे या उपदेशक या गुरु भी हो सकते हैं। आप विद्वान, अच्छी बुद्धि के संतानयुक्त, शासन

द्वारा सम्मान पाने वाले बड़प्पन से युक्त होंगे। विद्या के माध्यम से अपनी आजीविका चलाएंगे। पैतृक धन से भी धनी होंगे। यदि आपकी शिक्षा कम भी हो तो फिर भी धन आपको प्राप्त होता रहेगा। आप पैसे की वजह से नहीं, करामाती गुण से सम्मान पाएंगे। आप ऊंचे लोगों के साथ रह कर अपनी दिमागी शक्ति और राजदरबार से संबंधित रह कर, सम्मान प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी अर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी और भाग्योदय होगा। आप अपनी कमाई से नया मकान बनवाएंगे। आपको बहुत जायदाद का लाभ होगा। आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। उम्र बढ़ने के साथ-साथ सुख में भी वृद्धि होगी। आपकी पत्नी आपकी आज्ञाकारिणी और सेविका रहेगी।

यदि आपने विद्या अधूरी छोड़ दी, लोगों की व्यर्थ निंदा की, मुफ्त माल, दान आदि से जीवन व्यतीत करना शुरु किया, छोटी आयु में शराब-बीयर पीना शुरु कर दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अप्रत्याशित घटनाओं एवं अव्यवस्था से सतर्क रहें। विद्या में रुकावट हो सकती है, आपके पिता की मौत दमा या दिल की बीमारी या मानसिक रोग से हो ऐसी आशंका है। आपको श्वास या दमे की बीमारी होगी। प्रथम पुत्र संतान की प्राप्ति से अशुभ फल प्राप्त होने की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त गिफ्ट या दान न लेवें।
2. किस्मत पर भरोसा रखें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।
3. शिक्षा बी.ए. या समकक्ष अवश्य पढ़ें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली-भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें जैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा।

सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल-चलन शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :

1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि नौवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप लोगों पर परोपकार करेंगे तथा इसके अच्छे लाभ भी आपको मिलेंगे। आप बड़े परिवार के सदस्य होंगे। आप भाई एवं मित्रों से सहयोग प्राप्त कर धनवान बनेंगे। आपको चलते-फिरते कामों से अधिक लाभ मिलेगा। आपको संतान का सुख होगा। परंतु संतान के सुख प्राप्ति में विलंब हो सकता है। आपकी पत्नी धनी परिवार से होगी। आपके पास प्रचुर मात्रा में धन रहेगा। आप धन के विषय में लापरवाह रहेंगे। आप उदार प्रवृत्ति के, जागीरदार, सदा सुखी होंगे। माता-पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगे। आप पर कभी भी कर्ज का बोझ नहीं पड़ेगा। आपका भाग्य अपने माता-पिता के भाग्य से अच्छा होगा। आपकी पत्नी भाग्यवान और अमीर खानदान की होगी। आप पैसे के प्रति बहुत मोह नहीं करेंगे। तीर्थ यात्रा करेंगे भाग्योन्नति होगी उससे अधिक शुभ फल प्राप्त होते रहेंगे। आप धार्मिक विचार वाले होंगे।

यदि आपने दूसरों के माल पर बुरी नजर रखी, जुआ आदि खेला, बुरे काम किये, लोहा/मशीनरी आदि के कार्य किये, घर में शीशम का पेड़ हो, जब आपके नाम 3 मकान बन जायें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप ब्याज का धंधा करें तो नुकसान होगा। आपके दिल में दूसरों से बदला लेने की भावना रहती है। अग्निकाण्ड की शंका है। आपको सांस या दमे की बीमारी हो सकती है। संतान सुख में विघ्न या पुत्र-पौत्र संतान की चिंता रहेगी। मंदे कामों से बदनामी भी हो सकती है। आंखों की दृष्टि खराब हो ऐसी आशंका है। अमीरों से धन लूट कर गरीबों में बांटना, ऐसी आपकी सोच रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न करें।
2. घर की छत पर ईंधन-चौगाठ आदि न रखें।

उपाय :

1. माथे पर केसर का तिलक करें।
2. घर के अंत में अंधेरा कमरा बनायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगे। अगर सरकारी अधिकारी हुए तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा या जन्म के समय आकाश पर बादल छाये हुए होंगे, ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की उम्र तक समय मध्यम है जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी-रोटी के लिए दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगे। आपको संतान सुख अच्छी या बुरी अवश्य मिलेगी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद ससुराल से लोहा, बिजली का समान, काले-नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली की जेर, चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला-बदली अधिक बार होगी। 11-21-42 वर्ष आयु में पिता के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा-मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव के होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूं दान दें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगे। जैसे-जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे धन में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात के पक्के होंगे। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगे फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगे। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपकी पत्नी के जितनी संख्या में भाई-बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होगी। 34 वर्ष की

आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि आने वाले 40 वर्षों तक के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परस्त्री गमन किया। अपनी पत्नी से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरू हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठा वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन स्त्री और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगे। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगे। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :

1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।
2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुँडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुँडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो।

जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी कस्तुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती हैं।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब वर्षफल 2019-2020

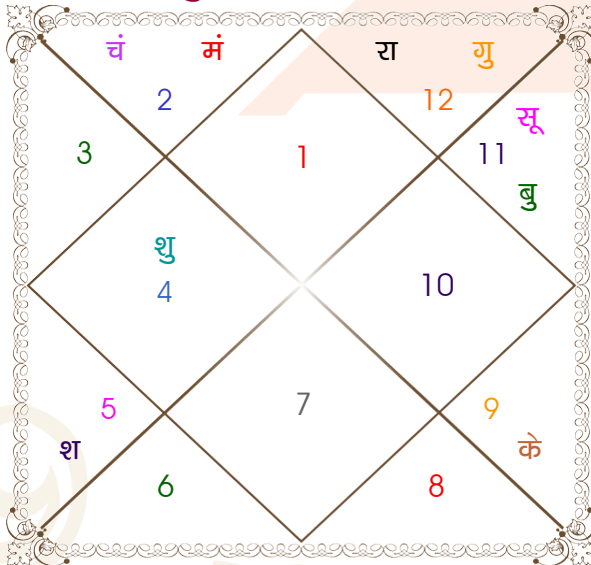
वर्तमान आयु - 33
वर्तमान दशा - मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	--	--	मन्दा
चंद्र	--	हाँ	--	मन्दा
मंगल	--	हाँ	--	नेक
बुध	--	--	--	नेक
गुरु	--	--	--	मन्दा
शुक्र	--	हाँ	--	मन्दा
शनि	--	--	--	मन्दा
राहु	--	--	--	मन्दा
केतु	--	--	--	नेक

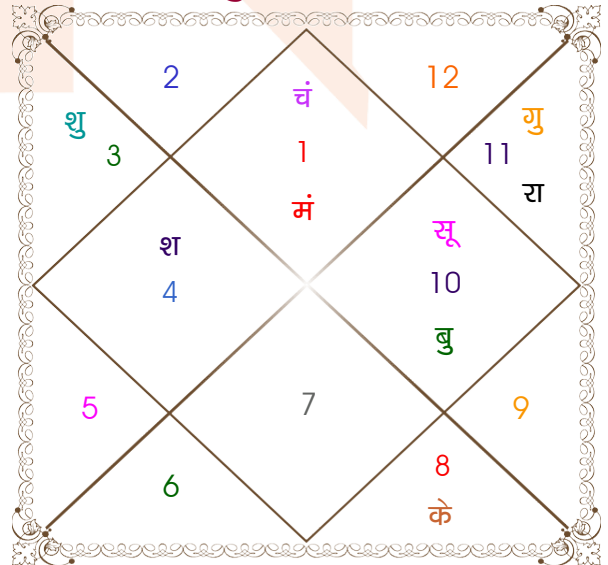
भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	--	हाँ	--	--	--	हाँ	हाँ	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2019 - 2020



वर्ष चन्द्र कुंडली 2019 - 2020



लाल किताब वर्षफल 2019-2020

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष सुस्ती और लापरवाही से जीवन में तरक्की के कई अवसर खो सकते हैं। मांस-शराब के इस्तेमाल करना संतान को कष्ट होगा या संतान सुख की चिंता रहेगी। दूसरे लोगों को गाली देना, झूठी गवाही देना, लड़ाई-झगड़ा करना आपके लिये ठीक नहीं है इन बातों से बचें। सरकारी विभाग द्वारा दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. झूठ न बोलें, जूठ भोजन न खावें और न खिलावें।
2. मांस-मछली न खावें और शराब आदि न पिये मादक चीजों का सेवन न करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से आपको बूढ़ी स्त्री या माता से झगड़ा करना आपकी तरक्की में रुकावट होगा, मांस-शराब का सेवन संतान विद्या या संतान की चिंता हो सकती है। आँखों में रोग का भय रहेगा, बहन-बेटी की चिंता रहेगी। जमीन-जायदाद के लाभ में रुकावट का कारण आपके अपने भाई-बंधु होंगे फिर भी उनसे झगड़ा न करें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. माता या माता समान स्त्री के पैर छूकर आशीर्वाद लेवें।
2. माता से दूरी के समय माता से चावल-चांदी सफेद कपड़े में बांध कर पास रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष आपके परिवार में अन्न-धन की कोई कमी नहीं रहेगी। आप भाई-बंधुओं के दुःख में हर समय साथ देंगे, आप नेक और इरादे के पक्के रहेंगे जो बात ठान ली वह पूरी कर दिखायेंगे। अगर बड़ा भाई जीवित हो तो उससे अधिक धन, मान आपको मिलेगा। परिवार के लोगों से भी लाभ मिलेगा।

मंगल की शुभता हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़ाई-झगड़ों से दूर रहें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा में कमी न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष हर बुधवार का दिन और दोपहर (3 से 5 बजे) का समय शुभ रहेगा। आपका भाग्योदय होगा या तरक्की होगी, आलस्य से दूर रहें। आप अपनी बुद्धि के द्वारा अधिक लाभ अर्जित करेंगे। आपकी मान-सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। आपकी मित्रता से सबको लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मनी प्लांट, रबर प्लांट आदि चौड़े पत्तों के पेड़-पौधे घर पर न लगावें।
2. पीतल के खाली बर्तन बन्द या उल्टे न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष किसी से धोखा-फरेब कर सकते हैं जो आपके लिये आगे आने वाले समय के लिए ठीक नहीं रहेगा, झूठी गवाही देना और गबन करना भी आपके लिये हितकर नहीं है। धन का अपव्यय या धन बुरे कामों में बर्बाद हो सकता है। आप समय को व्यर्थ न गवां कर हित और शुभ कामों में लगावें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें।
2. पीपल के वृक्ष को जल से सींचें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री से संबंध रह सकता है जो आपके लिये हानिकारक है और संतान के लिये चिंताजनक। चाल-चलन चाल-चलन पर धब्बा लगेगा, चाल-चलन संभालना एक जरूर चीज है। माता, पत्नी का झगड़ा होगा। कारोबार में हानि, मानसिक तनाव रहेगा। मामा को कष्ट हो सकता है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर कुएं में डालें।
2. चार आड़ू की गिटकों में सुरमा भर कर वीराने में दबायें।
3. अपनी पत्नी से दो बार विवाह (फेरे) करें। (पुत्र सुख के लिए)

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप भाई-बंधुओं के साथ लड़ाई-झगड़ा या धोखा न करें। मांस-मदिरा का सेवन करना आपको हार और हानि देगा। परिवार में समस्याएं बढ़ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें विशेष कर पेट/गुर्दे में पथरी का। आपके नाम पर अगर मकान बनेगा तो पुत्र सुख में बाधा आ सकती है।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध सोना या केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष बिना सोचे समझे या शेख चिल्ली की तरह कार्य करेंगे तो आपको हानि होगी, दीवानी या फौजदारी मुकदमों में न उलझें। रात्रि समय नींद का सुख कम मिलेगा। बिना सोचे समझे कोई कार्य न करें। परिवार का अतिरिक्त बोझ आप पर हो सकता है। धन का व्यय परिवार की बेहतरी या शुभ कामों पर होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी (चांदी की प्लेट पर खड़ा करके) घर में रखें।
3. शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा में सूर्यास्त्र करके सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष प्रगति मिले ऐसी संभावना है। तबदीली का चांस कम है। यात्रा से लाभ होगा। प्रदेश में भी कुछ समय व्यतीत हो सकता है। अपनी संतान के साथ या उसकी सलाह से कोई काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ होगा। आप जिसको पुत्र होने का आशीर्वाद देंगे उसके घर पुत्र पैदा होगा।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारे।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- 43 दिन रेत का तकिया बना कर रात को सिर के नीचे रख कर सोये।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2020-2021

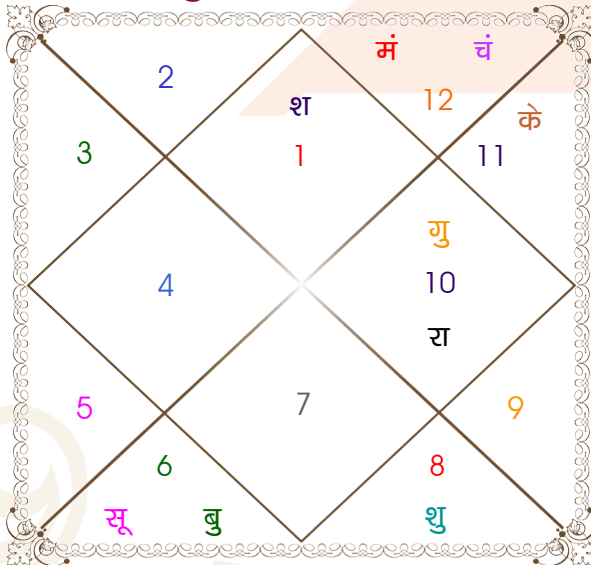
वर्तमान आयु - 34
वर्तमान दशा - मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	नेक
चंद्र	--	--	--	मन्दा
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	हाँ	--	नेक
गुरु	--	--	--	मन्दा
शुक्र	--	--	--	मन्दा
शनि	--	हाँ	--	नेक
राहु	--	--	--	मन्दा
केतु	--	--	--	नेक

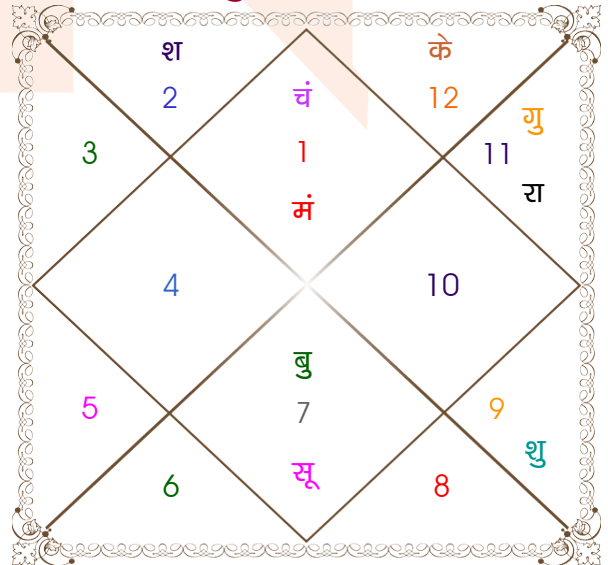
भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	हाँ	हाँ	हाँ	--	--	--	हाँ	--	--	--

वर्ष कुंडली 2020 - 2021



वर्ष चन्द्र कुंडली 2020 - 2021



लाल किताब वर्षफल 2020-2021

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप भाग्य पर भरोसा करेंगे, शत्रु दबे रहेंगे। मुकददमें में जीत होगी, संतान जन्म से भाग्योदय होगा। ननिहाल से लाभ होगा, पिता के रूतबे में कुछ उथल-पुथल का भय रहेगा। परस्त्री के साथ आपके संबंध बन सकते हैं मगर चाल-चलन ठीक रखें। सरकारी विभाग से लाभ होगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बेटी-बहन, साली-बुआ से झगड़ा न करें।
2. कर्ज और दान मुफ्त का माल न लेवें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके सभी काम तरस-तरस कर बनेंगे, विद्या संबंधी कामों में रुकावट हो सकती है, आपकी बात बदलने की आदत बनेगी, व्यतीत समय की बातें लोगों को सुना कर अपनी बढ़ाई करेंगे। 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' जैसी कहावत आप पर चरितार्थ हो सकती है। मुकददमें में हार का भय रहेगा।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर में रखें या आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में कायम करें।
2. 16 लीटर वर्षा का पानी कनस्तर में भरकर 4 शुद्ध चांदी के चौरस टुकड़े डाल कर रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी समाज में आवाज बुलन्द रहेगी, शत्रु मुंह की मार खायेंगे, मुसीबतें टल जाएगी, गुरु निर्धन-ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहेंगे, आप अपनी मनमर्जी के अनुसार कार्य करेंगे, किसी से दब कर नहीं रहेंगे। मीठा-भोजन या मिठाई आपको अधिक पसन्द रहेगी। मुकददमें में जीत या सरकारी विभाग से लाभ से लाभ हो सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।
2. लोग आपका नमक खाकर नमक-हरामी करेंगे, सतर्क रहे।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिमागी कार्यों से लाभ मिलेगा, विदेश भ्रमण की इच्छा भी रहेगी, समुद्री यात्रा से लाभ मिलेगा, कृषि से संबंधित कार्यों से लाभ मिलेगा। वक्तव्य देना, एकाउंटेंट/चार्टर्ड एकाउंटेंट, लेखन, प्रिंटिंग से संबंधित कामों से लाभ होगा। मुंह से निकली बात शत प्रतिशत सही हो सकती है। ननिहाल से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़की/बहन का विवाह अपने रिहाइशी मकान की उत्तर दिशा में न करें।
2. सेवक/नौकरों पर हमेशा नज़र रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से अधिक लाभ नहीं होगा। ख्वाबों के महल बनाना आपकी आदत बनेगी। ख्वाबी महल न बना कर आप समय का सदुपयोग करें। साधू को कष्ट दिया, पीपल का वृक्ष उजाड़ा से तो आपको हानि का मुंह देखना पड़ेगा। संतान की चिंता, पिता-दादा का स्वास्थ्य भी खराब रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें या पीपल के वृक्ष को पानी से सींचें (रविवार को छोड़कर)।
2. तांबे का पैसा 43 दिन लगातार बहते पानी में डालें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गुप्त रोग का भय है। चाल-चलन ठीक रखें वरना पत्नी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है। पत्नी से झगड़ा करना आपके लिये हार और हानि का कारण होगा। पत्नी की हर बात में हां में हां जरूर मिलायें मगर करें अपने मन की। आपके द्वारा दी गई जमानत आपको भरनी पड़ सकती है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्म स्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कैमिस्ट या डाक्टर, इंजीनियरिंग, से संबंधित कामों से लाभ हो सकता है। लोहा-लकड़ी के काम भी लाभ देंगे, माता-पिता के पास धन की बढ़ोत्तरी होगी। आपकी जायदाद बढ़ने की आशा है। सरकारी विभाग से लाभ मिलेगा और उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध बनेंगे।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परिवार में कोई खुशी का समय हो तो बाजे न बजवायें।
2. शराब आदि पीना, मांस-मछली खाने और इश्कबाजी से दूर रहें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मौके के ऑफिसर से झगड़ा नहीं करना चाहिए। परिवार वालों से नेक संबंध बनाये रखने में आपका भला है। परिवार से अलग रहना हानि देगा। पिता-ससुर को कष्ट की आशंका है। कारोबार में परेशानी का योग है आप अपनी संपत्ति बेच सकते हैं। बिना कारण जुर्माना/दंड का भय रहेगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती टोपी पहनें-पगड़ी बांधें या स्कार्फ बांधें।
2. अंधे व्यक्तियों को स्वादिष्ट भोजन खिलायें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कभी हिम्मत नहीं हारेगें। भाग्य आपका साथ देगा। धन-दौलत का अधिक लाभ होगा। आपको पुत्र संतान का सुख मिलेगा तो माता/सास को शारीरिक कष्ट हो सकता है खासकर आंखों में। चाल-चलन ठीक रखें वरना शारीरिक कमजोरी हो सकती है। आने वाले समय की अधिक सोच रहेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय कोई पीछे से आवाज दे तो काम पर न जायें क्योंकि आगे काम नहीं बनेगा।
2. व्यतीत समय की बातें करके को याद कर लोगों को न सुनायें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- गुरु-साधू की सेवा करें या पीपल का वृक्ष लगावे।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरु करें।)

लाल किताब वर्षफल 2021-2022

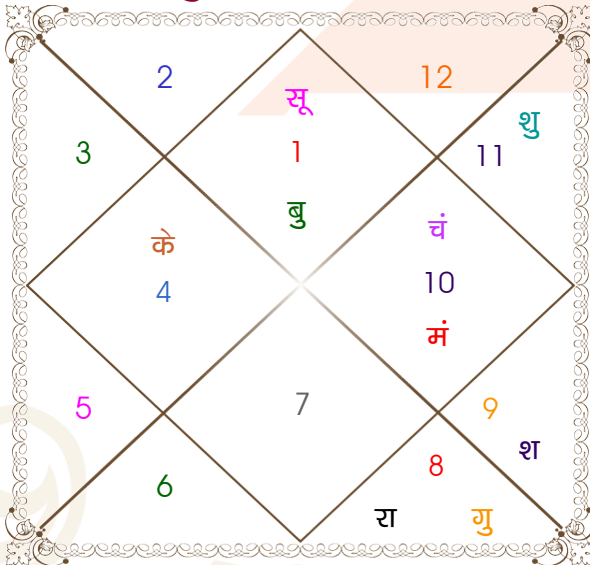
वर्तमान आयु - 35
वर्तमान दशा - मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	नेक
चंद्र	--	--	--	मन्दा
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	हाँ	--	नेक
गुरु	--	हाँ	--	मन्दा
शुक्र	--	--	--	नेक
शनि	--	--	--	नेक
राहु	--	हाँ	--	मन्दा
केतु	--	--	हाँ	मन्दा

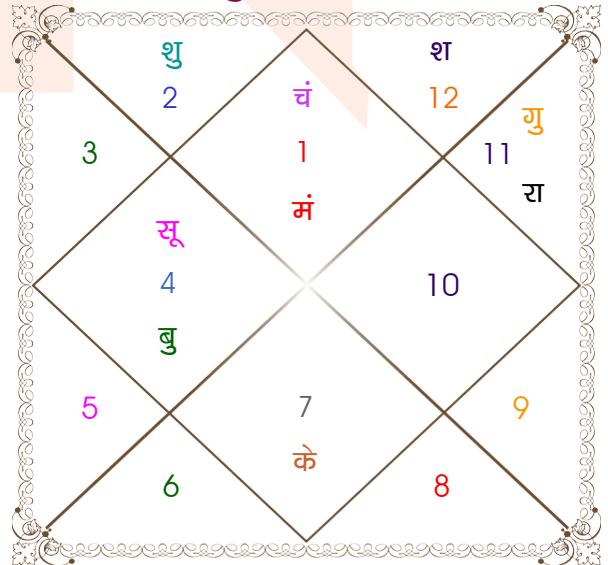
भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	हाँ	--	हाँ	हाँ	--	--	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2021 - 2022



वर्ष चन्द्र कुंडली 2021 - 2022



लाल किताब वर्षफल 2021-2022

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका तेज व प्रताप बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी, परोपकार की भावना रहेगी, आप दृढ़ निश्चयी, नशों से दूर रहेंगे। अधिक मेहनत करके आप अपना भाग्य चमकाएंगे। सरकारी विभाग में रुके काम बनेंगे। सरकारी अधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे और उनसे लाभ मिलेगा।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब आदि न पियें, मांस-मछली का भोजन न करें।
2. सूर्योदय से सूर्यास्त तक स्त्री से शारीरिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष खराब स्वास्थ्य के समय या वैसे ही रात के समय लिक्विड दवाई का प्रयोग आपके लिए हानिकारक है। विद्या संबंधी कामों में भी परेशानी आ सकती है। चोरों-जुआरियों, शराबी लोगों द्वारा आपका नुकसान होगा। किसी स्त्री या प्रेमिका द्वारा गलत सलाह से आपका धन-सम्मान नष्ट हो सकता है, सतर्क रहें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दूध को फाड़ कर उसका पानी पीयें अर्थात् पनीर का पानी पियें (स्वास्थ्य खराब के समय)
2. 10 दिन सुबह नाश्ते में कच्चा पनीर खावें।
3. रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पिये।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप की गिनती उच्च/प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी। आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। कोई सरकारी विभाग या पुलिस/सेना विभाग में कार्यरत है तो तरक्की मिलेगी नौकरी व्यापार में अधिक धन लाभ होगा। आप राजसी समय व्यतीत करेंगे। अच्छे या बुरे तरीके से आप धन कमाएंगे, जायदाद और वाहन का सुख होगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सोना न बेचे न गिरवी रखें।
2. दूध उबाल कर रसोई में गैस चूल्हे/ अंगीठी /चूल्हे आदि पर गिर कर न जले इसका विशेष ध्यान रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ हो सकता है। आपके मुंह से निकली हुई बात में दम होगा, आप दूसरों की परवाह नहीं करेंगे। मधुर भाषा बोलेंगे, कल्पनाशील विचार होंगे। आप पर दूसरे लोगों का प्रभाव रहेगा। आप परिवार के झगड़ों में सुलह करने में भूमिका निभाएंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अण्डा-पेस्ट्री आदि अण्डे से बनी चीजें न खावें।
2. शराब-बीयर न पियें, मांस-मछली का भोजन न करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अफवाहों का शिकार हो सकते हैं, पेशाब का रोग होने की संभावना है। आपको इस समय आलस्य त्याग कर भाग-दौड़ से अपने कामों को करना चाहिए और कोई ऐसा काम न करें जो आगे आने वाले समय में आपके लिए मुसीबत का कारण बने। आपका मन उदासी भरा भी रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।
2. दही, आलू, देशी घी धर्म स्थान में दें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कन्या संतान का सुख मिल सकता है। आप अकारण पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आपमें अच्छे गुण बढ़ेंगे मगर आपकी गुप्त कार्य करने की आदत हो जाएगी। विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे, ससुराल पा के लोग सहायक होंगे। बहन-साली से भी लाभ मिलेगा स्त्री आपके कार्यों में साथ निभायेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता/पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार में बार-बार बदला-बदली न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना रहेगी, भाई-बंधुओं का सहयोग मिलेगा। कर्ज का बोझ आप में नहीं रहेगा। पैसे के प्रति आप की दौड़ नहीं रहेगी। पत्नी के नाम पर काम शुरू करने से लाभ होगा, मकान-वाहन का सुख मिलेगा। तीसरा रिहाइशी मकान न बनावें वरना स्वास्थ्य को खतरा होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न रखें।
2. घर की छत पर ईधन-चौगाठ आदि न रखें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अंगहीन, निःसंतान, काने, गंजे व्यक्ति से दूर रहें। जन्म दिन के बाद आठवें मास से उलझनें बढ़ सकती हैं। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर-नीचे होता रहेगा, बिजली विभाग, जंगल विभाग, पुलिस विभाग से संबंधित कामों में परेशानी या धन और समय नाश हो सकता है। बंधन और कैद में न रहेंगे।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के (औफदप) के टुकड़े जल प्रवाह करें।
3. जिस दिन इस वर्ष का 8वां मास शुरू हो उस दिन 43-43 बादाम मंदिर में ले जाकर वहां रखें, उसमें से 43 बादाम उठा कर घर पर लाकर सफेद थैली में रख लें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष रीड़ की हड्डी या जोड़ों का दर्द, शुगर/पेशाब का रोग हो सकता है। माता की चिंता हो सकती है या माता को कष्ट हो सकता है। हृदय रोग के प्रति आलस्य न बरतें। पुत्र संतान के सुख की चिंता रहेगी। कुल पुरोहित से संबंध ठीक रखे तो पुत्र चिंता दूर होगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। यात्रा में रुकावट आयेगी या यात्रा में हानि हो सकती है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चने की दाल और केसर धर्म स्थान में दें।
2. कुल पुरोहित को धन वस्त्र आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करें। अगर कुल पुरोहित न हो तो 4 किलो चने की दाल महीने दो महीने में धर्म स्थान में दें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- सिक्के के (औफदप) 8 पीस चौरस जल प्रवाह करें या चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2022-2023

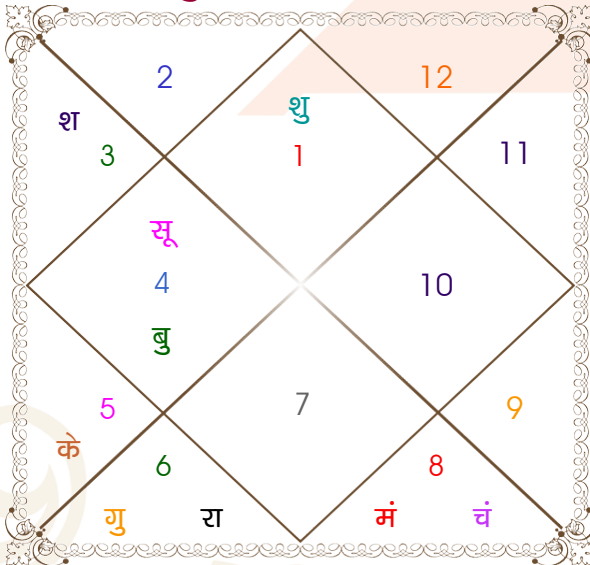
वर्तमान आयु - 36
वर्तमान दशा - मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	नेक
चंद्र	--	हाँ	--	मन्दा
मंगल	--	हाँ	--	मन्दा
बुध	--	हाँ	--	नेक
गुरु	--	हाँ	--	मन्दा
शुक्र	--	हाँ	--	नेक
शनि	--	हाँ	--	नेक
राहु	--	हाँ	--	मन्दा
केतु	--	हाँ	--	नेक

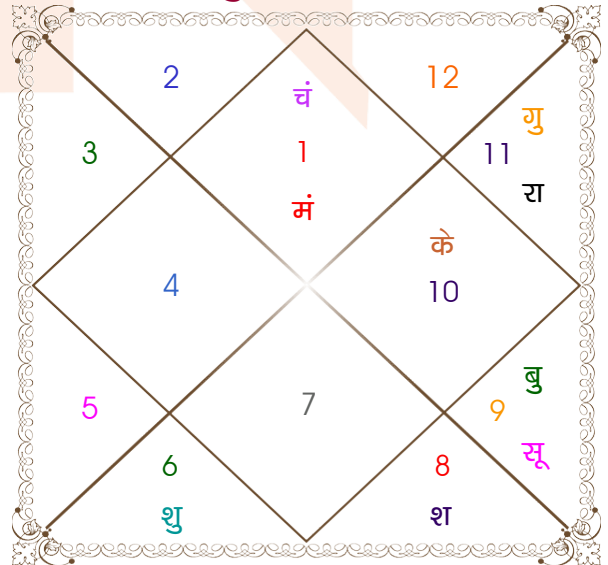
भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2022 - 2023



वर्ष चन्द्र कुंडली 2022 - 2023



Indian Astrology

लाल किताब वर्षफल 2022-2023

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके धन का उपयोग दूसरे लोग करेंगे मगर आप उनसे लाभ उठावेंगे। परिवार में नये कार्य शुरू हो सकते हैं जो लाभदायक रहेंगे। वस्त्रों के काम से लाभ मिलेगा, रात्रि समय किये कार्यों से अधिक लाभ मिलेगा, सरकारी विभाग या समुद्र की यात्रा से भी लाभ मिलेगा। माता/सास से झगड़ा न करें।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोरी न करें बल्कि चोरी की सोच मन में न लायें।
2. किसी भी स्त्री से झगड़ा न करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता-पिता का सुख कम मिलेगा। जौहरी-जुएं के कामों में हानि होगी। ननिहाल को कष्ट या उनसे झगड़ा होगा। मन की शक्ति क्षीण, विद्या में रुकावट या माता का सुख मिले, घर से दूर भी रहना पड़ सकता है। सर्दी-जुकाम और पानी से कष्ट का भय, हृदय रोग का भय रहेगा। बुजुर्गों को सांस-दमा रोग की आशंका है।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मीठा भोजन या केसर-दाल चना या गुड़-गंदम धर्म स्थान में दें।
2. अमावस्या के दिन दूध-चावल धर्म स्थान में दें।
3. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री से झगड़ा नहीं करना चाहिये। वैवाहिक समस्याएं या परिवार में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। छोटे भाई अगर हों तो उस के लिये समय ठीक नहीं। आपकी जुबान से निकला अपशब्द लड़ाई-झगड़े का कारण होगा। आपको गुस्सा करना नुकसानदेह है, समय धैर्य से निकालें।

मंगल की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री को उपहार देकर चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लें।
2. तन्दूर में मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलायें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष धन लाभ, परिवार में सभी सुखी और सुख के साधन मिलेंगे। कुल मिला कर राजयोग का समय है, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ प्राप्त हो ऐसा योग है। बहन-बेटी, बुआ-साली से भी लाभ हो सकता है। माता से धन-जायदाद का लाभ होगा मगर मातृ सुख में कमी की आंशका रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बेटी-बहन, बुआ-साली से झगड़ा न करें।
2. विधवा स्त्री से सम्बन्ध न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मामा की चिंता रहेगी, किसी से भी कोई चीज मांगने पर भी न मिलेगी, आवारा घूमने की आदत आपको हर जगह तिरस्कृत करेगी। मामा/ताऊ/चाचा से झगड़ा आपको हानि देगा। कर्ज लेना, दान/भिया मांगना, आने वाले समय को खराब कर सकता है। शत्रु पैदा होंगे मगर शत्रु अपने-आप मरते रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म मन्दिर के पुजारी को वस्त्र दान देवे।
2. शुद्ध सोना, केसर, चना दाल आदि पीली चीजें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, सुंदर बनना, संवराना आपकी आदत बन जायेगी, आशिकाना मिजाज भी हो सकता है। अपनी आयु के लोगों में आप प्रधान बन सकते हैं। धार्मिक होते हुए भी आप में इश्क की हवस रहेगी। उत्तम भवन व वाहन का सुख प्राप्त हो सकता है। लोगों से मार्ग दर्शन लेंगे।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल-चलन खराब न करें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. धर्म-कर्म में रूचि रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके हाथों से खर्च अधिक होगा या धन की कमी रहेगी। आप सबकी मदद करेंगे मगर लोग आपका कार्य बिगाड़ सकते हैं। लोहा, मशीनरी से संबंधित कार्यों से लाभ होगा। आप साहसपूर्ण कार्य करेंगे जिसके कारण आपको जोखिम भी उठाना पड़ सकता है।

शनि की शुभता बढ़ाने निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मछली का शिकार न करें, मछली न खायें। शराब न पिये।
2. कीकर या बेरी का वृक्ष घर में न लगायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष शस्त्र भय है, बिना लाइसेंस का हथियार रखने से आपको दण्ड/जुर्माने का भय है। चाचा से झगड़ा करने पर आपको हानि होगी। निम्न स्तर के लोगों के साथ मित्रता से हानि होगी। आप पर चोरी का लांछन भी लग सकता है। साहूकारी करना या लिखा-पढ़ी के बिना किये कार्यों से लाभ न होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के (औफदप) की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष गुरु भक्ति में रुचि रहेगी। चाल-चलन ठीक रहेगा। धर्म-ईमान की स्थिति शुभ होने के कारण संतान का सुख मिलेगा। पुत्र के द्वारा आपका भाग्योदय होगा और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग है तो पुत्र लाभ होगा। यात्रा से तरक्की होगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बुरे चलन के लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक/ट्रंक/अलमारी को हमेशा ताला न लगा रहें। ताले को कभी-कभी खोलते रहें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- 8 दिन नाश्ते में पनीर खावे या पनीर का बचा शेष पानी पिये।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2023-2024

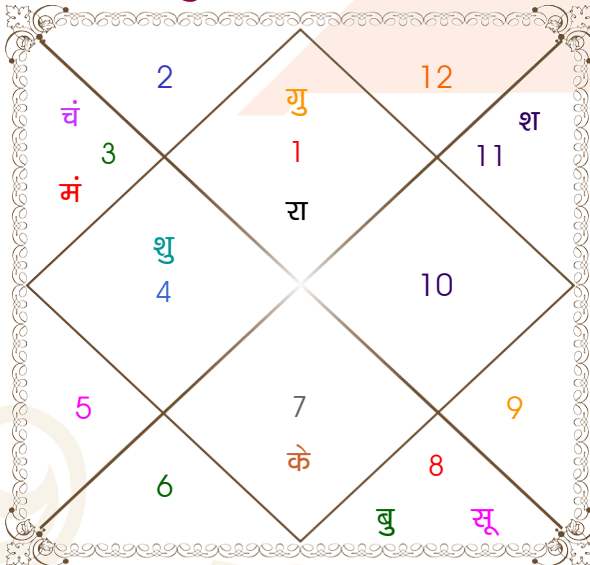
वर्तमान आयु - 37
वर्तमान दशा - मंगल

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	नेक
चंद्र	--	--	--	नेक
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	हाँ	--	मन्दा
गुरु	--	--	--	मन्दा
शुक्र	--	हाँ	--	नेक
शनि	--	--	हाँ	नेक
राहु	--	--	--	मन्दा
केतु	--	--	--	नेक

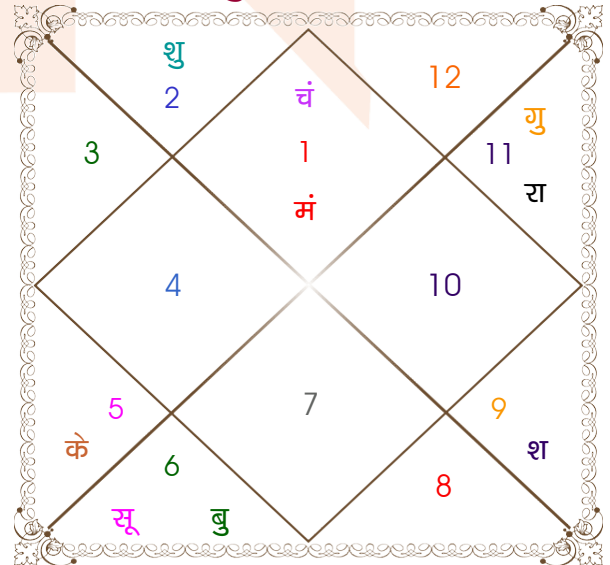
भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	--	--	हाँ	हाँ	--	--	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2023 - 2024



वर्ष चन्द्र कुंडली 2023 - 2024



लाल किताब वर्षफल 2023-2024

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप मृत्यु शैय्या पर पड़े किसी व्यक्ति के पास जब तक बैठें रहेंगे तब तक उसकी मृत्यु नहीं होगी। हर काम को जिम्मेदारी के साथ निभाने में प्रत्यनशील रहेंगे, स्वभाव साधु जैसा होगा। आप अपने लिये किये गये कार्यों को लोगों को समर्पित करेंगे। सच्चाई से अधिक तरक्की करेंगे।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. रसोई को अपवित्र न रखें।
2. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 3 शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चरित्र सुधरेगा और पराक्रम बढ़ेगा, चोरी से बचाव होगा। विद्या अच्छी रहेगी। 3, 6, 8, 12वां मास अधिक लाभदायक होगा, कुदरत खुद आपकी किस्मत बनाने में सहायक होगी, गरीबों से आपकी हमदर्दी रहेगी, किसी अंतर्राष्ट्रीय खेल में आपकी रुचि रहेगी या खुद भी उस खेल में हिस्सा ले सकते हैं।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बहन-भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों के लिये मिला सामान हड़प न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष दूसरों की सहायता कर के प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर जरूरी नहीं कि दूसरों की सहायता के बदले में आपको सम्मान मिलेगा, आपको कसरत करने या जिम आदि जाने का शौक रहेगा, मुकाबले की विद्या (प्रतियोगी परीक्षा) में आपकी जीत होगी, नर्म स्वभाव रखेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। धन-परिवार/संतान का सुख मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पेट का विशेष ध्यान रखें।
2. हाथी दांत न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू-टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता है। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल-चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। पिता-दादा की चिंता, परिवार में किसी को दिल का या मानसिक रोग की आशंका है। बुजुर्गों को दमा-सांस की बीमारी हो सकती है। शराब-बीयर आपकी बुद्धि को भ्रष्ट कर सकती है अतः इसका सेवन आपको वर्जित है। लोगों की निन्दा न करें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप में काम वासना की अधिकता के लक्षण है। दूसरी स्त्री आप पर मोहित हो सकते हैं। मामा-मौसी से लाभ मिलेगा, उत्तम भवन-वाहन का सुख मिलेगा, उत्तम भोजन-शयन का शौक रहेगा। आप अपने परिवार या शहर/गांव/देश में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, यात्रा अधिक होगी और यात्रा से लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।
2. बुजुर्गों मकान की दहलीज ठीक रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष धर्म पर अड़िग और पक्के रहेंगे। धर्म पर कायम रहेंगे तो मिट्टी के काम से सोना बनेगा। प्राण जाय पर वचन न जायें वाली कहावत आप पर चरितार्थ होगी। लोहा, कोयला, रबड़ आदि के कामों से लाभ हो सकता है। व्यसनों से दूर रहेंगे तो बहुत लाभ होगा। इन्साफ पसंद वृत्ति रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किराये के मकान में रिहाइश न करें।
2. ठगी-धोखे से धन न कमाएं।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी कुछ अदला-बदली का योग है। किस्मत का असर स्थिर नहीं रहेगा। आपका शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव हो सकता है। कुछ बनते कामों में रूकावट भी आ सकती है। आपको नीला-काला कपड़ा पहनना हानिकारक हो सकता है। सरकारी विभाग द्वारा रिश्वत या गबन का केस बन सकता है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूँ दान दें।
2. दूध शरीर पर मल कर स्नान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिनों-दिन आपके धन की बढ़ेत्तरी होती रहेगी, ऐसी संभावना है। आजीविका के नये साधन बनेंगे। आप अपनी धुन के पक्के रहेंगे। जिसके कारण आप बड़े से बड़े व्यक्ति के सामने अपना झंडा गाड़ लेंगे। आपकी संतान आपकी सहायता में रहेगी और संतान मुसीबत में दुश्मन को मार आयेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का काम न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- तांबे की बर्तन मूँग भरकर जल प्रवाह करें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरु करें।)

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।